

551.509.58: 551.579.4(541.4) '1975'

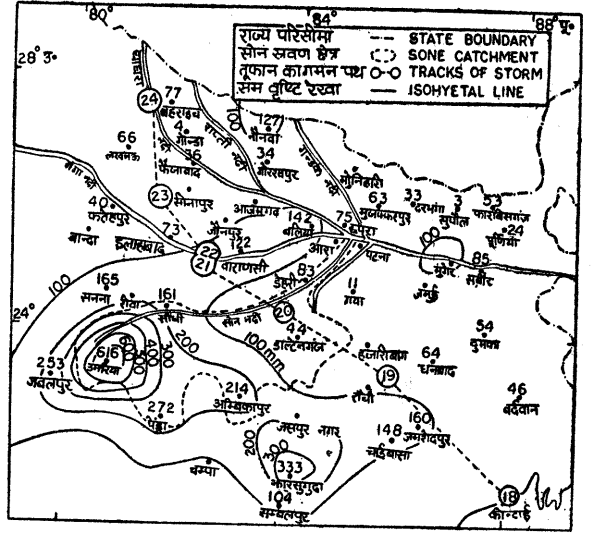
अगस्त 1975 की पटना की बाढ़ से संबंधित मौसम की एक झाँकी

1. 25 अगस्त को पटना और उसके आस-पास के इलाकों में एक भयंकर बाढ़ आई जिसके कारण पटना शहर एक झील बन गया। पटना दो मुख्य नदियों गंगा और सोन के बीच बसा हुआ है इसलिए इस शहर को बाढ़ का सामना दोनों तरफ से करना पड़ता है। सोन नदी गंगा से पटना के पश्चिम में मनेर के पास मिलती है। सोन नहर इन्द्रपुरी से निकल कर दानापुर के पूर्व गंगा में मिलती है। पटना शहर सोन नहर के बाँध से सुरक्षित रहता था। लेकिन 24 अगस्त 1975 की आधी रात को सोन नहर का पूर्वी बाँध शेखपुरा के पास टूट जाने से इस भयंकर बाढ़ का सामना करना पड़ा। 25 अगस्त को फेजर रोड, जो पूर्वी पटना में ऊँचा स्थान माना जाता है, करीब चार बजे प्रातः पानी में डूब गई। बाढ़ की गति ऐसी तेज थी कि 25 अगस्त की सुबह ही बहुत सी कालोनी जैसे राजवंशी नगर, शेखपुरा, विद्युत बोर्ड कालोनी, पटेल नगर, श्रीकृष्णनगर, श्रीकृष्णपुरी, वोरिंगरोड और पाटलीपुत्र कालोनी बाढ़ के पानी में डूब गये। बाढ़ का पानी इस रफ्तार से बढ़ रहा था कि लोग अपनी ज़रूरत की चीजें भी घर से न निकाल सकें और अपनी जान बचाने के लिए सुरक्षित स्थानों में चले गये। उसके बाद पानी उत्तर और पश्चिम दिशा की ओर बढ़ने लगा। जिससे उत्तर में किदवईपुरी, मन्दीरी, कोतवाली और छज्जूवाग क्षेत्र और दक्षिण में मीठापुर, यारपुर और जक्कनपुर में सोमवार को दोपहर तक बाढ़ का पानी फैल गया। दोपहर के बाद जनरल पोस्ट ऑफिस टेलीफोन एक्सेन्ज में पानी घुस गया। गांधी मैदान, राजेन्द्रनगर में तो पानी ढाई मीटर से भी ज्यादा चढ़ गया था। इस प्रकार 27 अगस्त तक पूरे शहर में बाढ़ का पानी घुस गया।

28 अगस्त को शाम तक पानी बढ़ना बन्द हो गया। दूसरे दिन बाढ़ वसे ही बनी रही। 30 अगस्त के बाद पानी धीरे-धीरे घटने लगा। इस बाढ़ ने शहर के चार लाख लोगों को बुरी तरह नष्ट कर दिया।

2. मौसम प्रणाली जिसने सोन नदी के जलग्रहण क्षेत्र में भारी वर्षा की

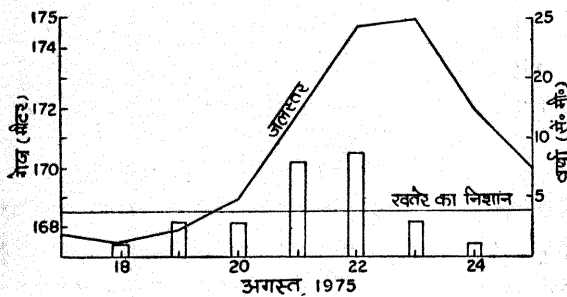
17 अगस्त को उत्तर-पश्चिम बंगाल की खाड़ी में एक मानसून अवदाब विकसित हुआ। 18 अगस्त को यह अवदाब गहरा हो गया और इसने पश्चिम बंगाल तट कोंटाई के पास पार किया। यह गहरा अवदाब उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर चल कर 20 अगस्त को डालटेनगंज से 50 कि०मी० उत्तर-पश्चिम में पहुँचा। फिर उत्तरपश्चिम की ओर चलकर इलाहाबाद के आस-पास 21 और 22 अगस्त दो दिन तक रहा। 23 अगस्त को वह लखनऊ के दक्षिणपूर्व करीब 75 कि०मी०



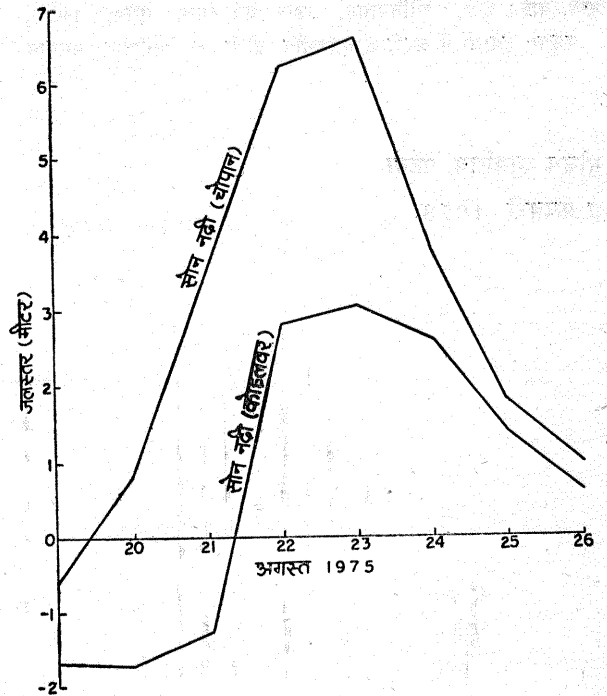
चित्र 1. 19 से 23 अगस्त की सम्पूर्णवृष्टिपात का आइसोहाइडल चार्ट और 18 से 24 अगस्त तक निम्नदाब तूफान का गमनपथ

की दूरी पर स्थित था और उत्तर की तरफ मुड़ने लगा। 24 अगस्त को जब वह हरदोई के पास पहुँचा तो उसकी उन्नता कम हो गई और अवदाब बन गया। इसके बाद वह उत्तर प्रदेश और नेपाल के पहाड़ी इलाकों में विलीन हो गया। इसके कारण उत्तर प्रदेश और बिहार के उत्तरी क्षेत्रों से 24 और 25 अगस्त को भारी वर्षा हुई। इस गहरे अवदाब ने 20 अगस्त को डालटेनगंज के उत्तरपश्चिम और 21 और 22 अगस्त को इलाहाबाद के पास स्थिर रह कर भारी वर्षा की। इस भारी वर्षा का केन्द्र उमरीया के पास था, जो सोन नदी के उच्च जलग्रहण क्षेत्र में पड़ता है। चित्र-1 में 19 से 23 अगस्त तक की संचयी वर्षा का समवृष्टि रेखा चार्ट और अवदाब का गमन पथ 18 से 24 अगस्त तक प्रदर्शित किया गया है। उपर्युक्त गमन पथ और भारी वर्षा से यह मालूम होता है कि सोन नदी के उच्च जलग्रहण क्षेत्र में भारी वर्षा का एक मात्र कारण यह गहरी अवदाब था। 20-22 अगस्त को सोन नदी का उच्च जलग्रहण क्षेत्र गहरे अवदाब के ठीक दक्षिणपश्चिम में स्थित था। फिर यह गहरा अवदाब इलाहाबाद के पास लगातार दो दिन तक स्थिर रहा।

श्री वाई० पी० राव आदि के अनुसार वर्षा ऋतु में जब भी पछुआ हवाओं में उपरी क्षोभमण्डलीय द्रोणी उत्तरपश्चिम भारत में प्रवेश करती है तो वह मानसून अवदाब के गमन-पथ में परिवर्तन लाती है, यदि द्रोणी अवदाब के निकट हो। अगर अवदाब उत्तरपश्चिम दिशा की ओर जा रहा हो और यह द्रोणी पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ रही हो तो अवदाब के गमन की दिशा मुड़कर उत्तरपूर्व हो जाती है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि ऐसी ही एक द्रोणी के प्रभाव से यह अवदाब इलाहाबाद के पास दो दिन 21 और 22 अगस्त तक स्थिर रहा, साथ ही साथ उत्तर दिशा की तरफ मुड़ाव किया। उपरोक्त



चित्र 2. सोन नदी के उच्च जलग्रहण क्षेत्र में 17 से 25 अगस्त 1975 तक औसत वर्षा तथा चौपान पर जल स्तर की स्थिति



चित्र 3. 19 से 26 अगस्त 1975 तक चौपान और कोइलवर में सोन नदी का जलस्तर

वायुमण्डलीय गतिविधियों के प्रभाव से सोन नदी के उच्च जलग्रहण क्षेत्र में 21 से 23 अगस्त तक भारी वर्षा हुई।

चित्र 2 में सोन नदी के उच्च जलग्रहण क्षेत्र में दिनांक 17 से 25 अगस्त 1975 तक औसत वर्षा तथा सोन नदी के अपस्ट्रीम स्थल चौपान पर जल स्तर की स्थिति प्रदर्शित की गई है, जो 21 से 23 अगस्त तक भारी वर्षा की पुष्टि करती है यह अवदाब उत्तर की ओर मुड़ा तो 24 और 25 अगस्त को उत्तर प्रदेश और बिहार के उत्तरी इलाकों में भी व्यापक वर्षा की ओर बिहार में गंगा के संग्रहण क्षेत्रों में काफी पानी आ गया। इसके पहले 5 अगस्त और 13 अगस्त को भी बंगाल की खाड़ी में अवदाब बने थे, जिसमें से पहले ने उत्तरी उड़ीसा का तट बालेश्वर पर और दूसरे ने पश्चिम बंगाल का तट सागर द्वीप के पास पार किया। यह दोनों उत्तरपूर्वी मध्य प्रदेश पर होते हुए दक्षिणपश्चिम उत्तर प्रदेश के इलाकों में पहुंचे और फिर मानसून द्रोणी में विलीन हो गये थे। इनके साहचर्य से भी पश्चिमी बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश में व्यापक वर्षा हुई थी।

इन सब के प्रभाव से बिहार में 21 अगस्त के आस-पास करीब सभी नदियों का जल स्तर खतरे के चिन्ह से ऊपर आ गया था। इधर गंगा का पानी इलाहाबाद से लेकर पटना तक

बढ़ रहा था। सोन नदी के उच्च जल ग्रहण क्षेत्र में एकाएक भारी वृष्टि होने के कारण सोन नदी में बाढ़ आ गई (चित्र 3)। सोन नदी के अपस्ट्रीम स्थल चौपान और डाउन स्ट्रीम स्थल कोइलवर पर जल-स्तर की स्थिति 19 से 26 अगस्त तक दर्शाई की गई है। सोन नदी के पानी का एकमात्र निकास गंगा नदी ही है। गंगा के पानी का जल ऊंचा होने के कारण सोन नदी का पानी गंगा के अन्दर न समा सका। इस प्रकार सोन नदी में बढ़ा हुआ पानी पटना के आस-पास वेग से फैल गया, जिसके फलस्वरूप पटना शहर और उसके आस-पास भयंकर बाढ़ आ गई।

पटना शहर का पानी 28 से 30 अगस्त तक स्थिर रहा। यह मानसून अवदाब 24 और 25 अगस्त को, उत्तर प्रदेश और नेपाल के पहाड़ी इलाकों में काफी वर्षा देकर लुप्त हो गया, जिससे पटना के पूर्व में गंगा की सहायक नदियों में काफी पानी आ गया। इस तरह पानी का निकास शीघ्र न हो सका।

3. लेखक श्री ए० के० सेन शर्मा, मौसम विज्ञानी का बहुत आभारी हैं जिन्होंने लेखक को यह लेख लिखने में उत्साहित किया।

संदर्भ

राव, वाई० पी०, श्रीनिवासन, व्ही० एवं रमन, एस०, 1970,
पछुवा हवाओं में ऊपरी क्षोभमंडलीय द्रोणी का भारतीय मानसून

पर प्रभाव; सिम्पोजियम ऑफ ट्रोपिकल मिटियोरोलोजी, हवाई, भाग 4,
पृष्ठ 1-14.

श्रीनिवासन, व्ही०, रमन, एस० एवं मुक्जी, एस०, 1970, फोरकास्टिंग
मैनुअल, भाग 3, भारत मौसम विज्ञान विभाग प्रकाशन ।

मौसम कार्यालय, पटना
7 फरवरी 1978

पी० प्रसाद